महाकाव्य युग और महाभारत

जिस काल में रामायण और महाभारत की घटनाएं रचना हुई थी और इनपर मूल ग्रंथों की रचना हुई वह काल प्राचीन भारत के इतिहास में महाकाव्य युग कहलाता है

महाभारत की कथा →

वंश		राजा
चन्द्रवंश	—	भरत
भरतवंशीय	—	कौरव, और पांडव

थे इसलिए भारत कहलाये

जगह	राजा
हस्तिनापुर	शान्तनु

शान्तनु ↓ पुत्र
विचित्रवीर्य

धृतराष्ट्र — पत्नी - गांधारी
पुत्र सौ - दुर्योधन, दुःशासन

पांडु ↓ पत्नियां
कुन्ती, माद्री

कुन्ती → युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन
माद्री → सहदेव, नकुल

महाभारत में कौरवों तथा पाण्डवों के युद्ध का वर्णन है
प्राचीन काल में चन्द्र वंश में भरत नाम के प्रतापी

महाभारत

दोनों पक्षों ने अधिक से अधिक राज्यों का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की। पश्चिम की ओर वत्स, चेदि, काशी, करूष, दशार्ण, पान्चाल के नरेशों तथा कुछ यादव शाखों ने पांडवों का साथ दिया। पूर्व पश्चिम तथा दक्षिण के अन्य सभी राजा कौरवों के पक्ष में लड़ने के लिए उपस्थित हुए। कृष्ण अर्जुन के सारथी और पाण्डवों के कूटनीति सलाहकार थे किन्तु प्रत्यक्ष रूप से उन्होंने युद्ध में भाग नहीं लिया

कुरुक्षेत्र के प्रसिद्ध मैदान में युद्ध हुआ, जो अठारह दिन चला अन्त में पाण्डवों की विजयी हुई। उनकी ओर पाँच पाण्डव और सात्यकी बचे रहे कौरव वंश में वृद्ध धृतराष्ट्र को छोड़कर कोई शेष नहीं रहा।

विजय के उपरान्त युधिष्ठिर सिंहासन पर बैठे। उन्होंने ने एक अश्वमेघ यज्ञ भी किया किन्तु वे अधिक दिनों तक शासन नहीं कर सके महाभारत युद्ध के कुछ ही वर्ष बाद यादवों का गृह कलह में नाश हो गया और कृष्ण भी चल बसे!! युधिष्ठिर ने अर्जुन के नाती परीक्षित को राज्य सौंपकर अपने भाइयों समेत वन के लिए प्रस्थान किया।

महाभारत

AUGUST 2019

July 2019

Monday 29

इन्द्रप्रस्थ को आधा राज्य मिला किन्तु वे [illegible] से
चारों दिशाओं में अपना विजय अभियान आरम्भ
किया। दुर्योधन पहले से ही पाण्डवों से जलता था उसने
पाण्डवों को राज्य से वंचित करने के लिए एक युक्ति
चली तथा जुआ खेलने के लिए युधिष्ठिर को आमंत्रित
किया। युधिष्ठिर ने अपना सर्वस्व, यहाँ तक कि
द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया और हार गये।
दुर्योधन की आज्ञा दुःशासन ने भरी सभा में
द्रौपदी का अपमान किया। दूसरी बार फिर जुआ
खेला गया। उसकी शर्त यह थी कि हारने वाले को

Tuesday 30

बारह वर्ष वन में बिताने पड़ेंगे और
फिर एक वर्ष अज्ञातवास करना पड़ेगा। इस बार भी
युधिष्ठिर हार गये। विवश होकर पाण्डवों
को वन के लिए प्रस्थान करना पड़ा। तेरह वर्ष
की अवधि पूरी कर के पाण्डव लौटे और अपना
राज्य वापस माँगा किन्तु दुर्योधन दुराचारी
था उसने घोषणा की कि युद्ध के बिना मैं सुई
की नोक के बराबर भी जमीन पाण्डवों को नहीं
दूँगा। कृष्ण ने उसे बहुत समझाया किन्तु
उसने एक न सुनी। युद्ध अनिवार्य हो गया।

MI NOTE 9 PRO
QUAD CAMERA

महाभारत

27 Saturday

राजा कुरु के कौरव तथा पाण्डव दोनों ही अनुवंश के और वे भारत कहलाते थे भारत लोग हस्तिनापुर पर शासन करते थे हस्तिनापुर के राजा शान्तनु के तीन पुत्र थे लेकिन उनकी मृत्यु के पश्चात कुछ कारणों से छोटा पुत्र विचित्रवीर्य गद्दी पर बैठा उनके दो पुत्र हुए - धृतराष्ट्र और पाण्डु। धृतराष्ट्र अन्धे थे इसलिए पाण्डु हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठे. धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारी से हुआ जिससे एक सौ पुत्र उत्पन्न

28 Sunday

हुआ जिसमे दुर्योधन और दुःशासन अधिक प्रसिद्ध हुए। पाण्डु के दो रानियाँ थी कुन्ती और माद्री। कुन्ती से युधिष्ठिर भीम तथा अर्जुन और माद्री से नकुल और सहदेव हुए पाण्डु की युवा अवस्था में ही मृत्यु हो गई तब धृतराष्ट्र ने शासन भार सम्हाला। युधिष्ठिर जो कुरुवंश के सबसे बड़े थे युवराज नियुक्त किया गया

पाण्डु युवावस्था में ही परलोकवासी हो गये थे मृत्यु के उपरान्त उनके पुत्रों को